

बच्चों में शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी जरूरी



रायपुर। बच्चों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए अच्छी शिक्षा के साथ ही अच्छे संस्कार भी जरूरी हैं संस्कारों को अच्छा बनाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता होती है

यह विचार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की क्षेत्रीय प्रशासिका ब्रह्माकुमारी कमला बहन ने संस्थान द्वारा चौबे कालोनी में आयोजित समर कैम्प के उद्घाटन समारोह में व्यक्त किये, समारोह में उपस्थित बच्चों को अपने आशीर्वाचन में उन्होंने कहा कि हरेक माता-पिता की यह शुभ इच्छा होती है कि उनका बच्चा बड़ा होकर किसी ऊंचे पद पर आसीन हो और उनका नाम रोशन करे इसलिए वह बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए पूरा प्रयास भी करते हैं किन्तु बच्चों के चारित्रिक एवं नैतिक उन्नति के लिए पर्याप्त ध्यान नहीं देते

जिसके परिणाम स्वरूप आध्यात्मिक शिक्षा से वंचित होने के कारण बच्चों का नैतिक उत्थान नहीं हो पाता है और उनका व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है, मनोविज्ञान यह कहता है कि बच्चों में संस्कार परिवर्तन 15 वर्ष की उम्र तक ही हो सकता है बाद में संस्कार बदलना मुश्किल हो जाता है इसीलिए समर कैम्प के माध्यम से छोटे बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा देने का प्रयास प्रतिवर्ष किया जाता है

कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ. विनोद चौधरी ने कहा कि इस समर कैम्प में आकर उन्हें अपना बचपन याद आ गया, बचपन में उन्हें बड़ों से रामायण आदि की बहुत अच्छी-अच्छी शिक्षा भरी कथाएं सुनने को मिली जिसने आगे चलकर उनके व्यक्तित्व का निर्माण करने में अहम् भूमिका निभाई। समारोह में बड़ी संख्या में उपस्थित

बच्चों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अच्छा इंसान बनने के लिए अच्छी आदतों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए ब्रह्माकुमारी संस्थान इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है, उन्होंने बच्चों को कुछ अच्छे टिप्स देते हुए कहा कि सदैव सकारात्मक सोच रखकर चलें और कभी भी अपनी तुलना किसी अन्य बच्चों से नहीं करें

इस अवसर पर ब्र.कु.रश्मि बहन ने कहा कि यह समर कैम्प चौबे कालोनी सेवाकेन्द्र रायपुर में विगत सात वर्षों से निरन्तर आयोजित किया जा रहा है इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का समावेश कर उनके व्यक्तित्व का विकास करना है। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.भावना ने किया प्रारम्भ में कु. अंजलि ने सुन्दर स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया।



समर कैम्प का भव्य आयोजन

अंबिकापुर (छ.ग.)। ब्रह्माकुमारी द्वारा आयोजित समर कैम्प 'उत्कर्ष 2012' का उद्घाटन जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी धनंजय देवांगन, सिविल सर्जन डॉ. सुषमा सिन्हा, केयर इंडिया के मनोज सतपते एवं ब्र.कु.विद्या बहन ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर धनंजय देवांगन ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि सचिन तेन्दुलकर, बाइचिंग भूटिया, कल्पना चावला ये सब आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा। उन्होंने सफल व्यक्तियों का उदाहरण देकर बच्चों को उन्हें अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि आप सब अपने अंदर कोई न कोई विशेषताओं को पहचान कर उसे विकसित कर सकते हैं। उन्होंने बच्चों को खेलने, पढ़ने तथा अन्य सभी कार्यों में बेलेस बनाकर समय का अधिकतम सदुपयोग करने की प्रेरणा दी एवं संस्था को इस प्रकार के आयोजन के लिए बधाई देते हुए सराहना की। कार्यक्रम में सिविल सर्जन डॉ. सुषमा सिन्हा ने बच्चों को आशीर्वाचन देते हुए कहा कि हमें कोर्स की पढ़ाई के उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कुम्हार बर्तनो का निर्माण करता है उसी प्रकार शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करना है। इस समरकैम्प में विभिन्न क्लासेस, एक्टिविटीज, कार्यशालाओं एवं मनोरंजक खेलों के माध्यम से बच्चों में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को धारण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. उमेश भाई ने कराया।

विचार, व्यवहार और जीवन में सकारात्मक

परिवर्तन अनुभूति शिविर का आयोजन

मेडिटेशन सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण जानकी नगर, इन्दौर। हमारे व्यक्तित्व के विकास का आकलन जीवन के 5 पहलुओं के विकास से किया जाता है। ये हैं- शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक पहलू। इन सभी का सन्तुलित विकास मेडिटेशन के द्वारा होता है। उक्त विचार जानकी नगर सेवाकेन्द्र के द्वारा विचार, व्यवहार तथा जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हेतु आयोजित 5 दिवसीय अनुभूति शिविर में ब्र.कु.मितु बहन ने व्यक्त किये। उन्होंने

के विचारों का प्रभाव हमारे शरीर के अंगों के विकास पर पड़ता है। हमारी आत्मा में ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, खुशी, आनंद और शक्ति ये गुण मुख्य रूप से होते हैं इन सातों गुणों का प्रभाव हमारे शरीर की विभिन्न प्रणालियों के विकास पर पड़ता है। इसे विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान के गुण का हमारे शरीर के तंत्रिका तंत्र, शान्ति का श्वसन तंत्र, प्रेम का हृदय रक्त संचरण तंत्र, खुशी का पाचन तंत्र, आनंद का अंतः स्रावी ग्रंथियों से तथा शक्ति का तंत्रिका तंत्र का विकास से संबंध

निराकरण करता है एक पल का प्रभू स्मरण- तमिलनाडु की ब्र.कु.वासुमति ने सदा ओ के रहने की टेकनीक विषय पर अपने उद्बोधन में कहा कि आजकल सड़कों पर कहीं भी ट्रैफिक जाम होना आम समस्या बन गई है। हालांकि यह परिस्थिति हमारे वश में नहीं होती है न ही हम इसके जनक होते हैं। फिर भी यह हमें तनाव ग्रस्त करते हुए हमारी खुशी जरूर गायब कर देती है। लेकिन इससे भी बड़ी समस्या है हमारे मन में व्यर्थ, निरर्थक संकल्पों का तेजी से आवागमन होना। क्यों?, क्या?, कैसे?, कहां? जैसे व्यर्थ के प्रश्नों की तेज गति से व्यू (कतार) लग जाती है। और हमारे मन में संकल्पों की ट्रैफिक जाम लग जाते हैं। फलस्वरूप हम तनाव ग्रस्त होकर धीरे-धीरे गहरे अवसाद और निराशा में आ जाते हैं। इस परिस्थिति से निजात पाने का उपाय बताते हुए आपने कहा कि एक पल का प्रभुस्मरण हमारे मन में होने वाली संकल्पों की ट्रैफिक जाम का निराकरण कर देता है। इसको आसान करने के लिए टिप्स देते हुए उन्होंने तीन मंत्र बताए कि कोई भी नया कार्य करने से पहले एक पल मन के संकल्पों को रोक यह विचार लाये कि- मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ दूसरा विचार कि- मैं भगवान का बच्चा हूँ तिसरा विचार कि- यह वक्त भी बदल जाएगा। इन विचारों को मंत्र की तरह बार-बार मन में रिवाइज (जाप) करें जिससे हमारी मूड ठिक हो जाएगी हम खुशी का अनुभव करने लगेंगे और तनाव, हलचल तथा अशान्ति की स्थिति से उबर जाएंगे फिर हम कोई भी परिस्थिति में डिस्टर्ब नहीं होंगे



जबलपुर। जनरल आफिसर कमान्डींग (मध्य भारत क्षेत्र) ले. जनरल आर.एस.प्रधान, एवीएसएम, वीएसएम, एसएम को ईश्वरीय सौगत देते हुए ब्र.कु.विनीता बहन।



इन्दौर। प्लेटीनम जुबली के उपलक्ष्य में सदभावना रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए इन्दौर नगर पालिक निगम की जनकार्य समिति के चेयरमैन धाता जवाहर मंगवानी।



क्षेत्र। परमात्म अनुभूति कार्यक्रम में उपस्थित जन समुह को संबोधित करती हुई ब्र.कु.आस्था दीदी।



कहा कि सकारात्मक व्यक्तित्व के निर्माण में मेडिटेशन से संतुलन आता है। एक परिपक्व और स्थाई सकारात्मक व्यक्तित्व के लिये निरन्तर शुद्ध और सात्विक विचारों की आवश्यकता होती है जो की हमें सिर्फ राजयोग मेडिटेशन ही देता है। इसके अभ्यास से सम्बंधों में मधुरता बनाये रखने की कला आती है।

उत्तम स्वास्थ्य का निर्माण हमारे ही हाथों में शिविर में उत्तम स्वास्थ्य का निर्माण हमारे हाथों में विषय पर अपने उद्बोधन में साकेत सेवा केन्द्र की प्रभारी ब्र.कु.अम्बिका ने कहा कि हमारे मन

है। राजयोग मेडिटेशन से हमारी आत्मा के इन सातों मौलिक गुणों का विकास होता है। क्योंकि राजयोग के माध्यम से हम गुणों के स्रोत परमात्मा जिन्हें सर्व गुणों का सागर भी कहा जाता है से संबंध जोड़ते हैं। इस प्रकार हमारी आत्मा में भी परमात्मा के गुण आने लगते हैं। जैसे की चार्जर से हम पावर हाउस की शक्ति को हमारे यंत्र मोबाइल आदि की बैटरी को चार्ज कर लेते हैं।

मन की ट्रैफिक जाम का